क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का संक्षिप्त विवरण
(आभासीय माध्यम द्वारा, दिनांक २२.०९.२०२०)

वन उत्पादकता संस्थान, राँची के द्वारा वन जैव विविधता संस्थान, हैदराबाद के साथ संयुक्त रूप से *द्वितीय एक दिवसीय क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन* (Regional Research Conference) का आयोजन वेबिनार के माध्यम से दिनांक 22 सितम्बर, 2020 को किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उदेश्य विभिन्न हितधारकों की वनिकी से संबधित शोध की आवश्यकताओँ को ध्यान मे रखते हुए भविष्य की परियोजनाओं का सूत्रीकरण करना है। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए डॉ. नितिन कुलकर्णी, निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद के तत्वाधान मे उपयुक्त परियोजनाओं के निरूपण के लिए अति महत्वपूर्ण इस सम्मेलन में सभी गणमान्य प्रतिभागियों का स्वागत किया . उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों को चार विभिन्न सत्रोँ मेँ संपन्न होने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा को विस्तार से अवगत कराया । इस अवसर पर कार्यक्रम के सहयोगी वन जैव विविधता संस्थान, हैदराबाद के निदेशक श्री. डी जयप्रसाद, भा.व.से., ने भी उपस्थित गणमान्य जनों का स्वागत करते हुए भरोसा जताया कि कार्यक्रम के सभी सत्र में विचार-मंथन के द्वारा महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होंगे। मुख्यतः वन 6 राज्योँ के वरिष्ठ्तम वन अधिकारियोँ, केंद्रीय एवं राज्य वन मंत्रालय के सदस्यों ,कॉलेजों के प्रतिनिधि, विश्वविद्यालयों, गैर सरकारी संगठन, औद्योगिक क्षेत्र के गणमान्य अतिथि ने सम्मलेन में भाग लिया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य आतिथेय श्री अरुण सिंह रावत, भा.व.से., महा निदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून, एवँ अन्य अतिथिगण यथा डॉ. जोस टी. मैथ्यूज, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक (आर.एम.डी.), पश्चिम बंगाल, श्री. ए.के. पांडे, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख , बिहार, श्रीमती शोभा, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, तेलंगाना, श्री लोकेश जैसवाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, तेलंगाना, डॉ. डी. नलिनी मोहन, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, डॉ. ए.के. पाठक , सहायक प्रधान मुख्य वन संरक्षक , ओडिशा, डॉ. संगीता दुबे, सहायक प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान), पश्चिम बंगाल, डॉ. कैलाश चंद्रा, निदेशक, भारतीय प्राणि विज्ञान सर्वेक्षण संस्थान, कोलकाता, एवँ डॉ. के.के. शर्मा, निदेशक, भारतीय प्राक्रिटिक राल एवं गोंद संस्थान (भा.कृ.अ.प.) , रांची के अलावा रांची एवं हैदराबाद के अन्य कई संस्थानोँ के वरिष्ठतम अधिकारी एवँ वैज्ञानिक उपस्थित रहे। उपरोक्त के अलावा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के श्री एस. डी. शर्मा, उप महानिदेशक (अनुसंधान), डॉ. सुधीर कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), सभी अन्य उप महानिदेशक व डॉ. ए.के. पांडेय, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवँ विस्तार) तथा अन्य सभी सहायक महानिदेशक महोदयोँ नेँ संगोष्ठी मेँ सक्रिय रूप से भाग लिया।

डॉ. एस. डी. शर्मा, भा.व.से., उप महा निदेशक (अनुसंधान), भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून नें इस सम्मलेन के उदेश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस कार्यशाला के अंतर्गत झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल , तेलंगाना, आंध्रा प्रदेश तथा ओड़िसा राज्यों के हितधारकों के साथ विचार विमर्श कर स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर अनुसन्धान कि आवश्यकताओं कि पहचान करने के लिए तथा उनकी प्राथमिकतायें निर्धारित करने के लिए राज्य वन विभाग का अनुसन्धान संभाग, विश्वविद्यालयों, अनुसन्धान में लगे अन्य संस्थाओं, विषय विशेषज्ञों, गैर सरकारी संगठनों, किसानों, उद्योग और अन्य हितधारकों से चर्चा और विचार विमर्श कर राष्ट्रीय वन्य अनुसन्धान योजना तैयार की जायेगी. उद्घाटन सत्र मेँ उपस्थित अन्य विशिष्ट अतिथियोँ ने भी अपने विचार रखते हुए, कार्यक्रम के उद्धेष्योँ को सराहा तथा उपस्थित विभिन्न संस्थानोँ से प्रतिनिधित्व की भूरी – भूरी प्रशंसा की।

श्री अरुण सिंह रावत , भा.व.से., महा निदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून नें परिषद द्वारा किसानों के लिए त्वरित वृद्धि वाली प्रजाति यथा, *मिलीया डूबिया* और *कैजूरिना* के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में पूरे भारत में 29 वन विज्ञान केंद्र कार्यरत हैं और अब हम विभिन्न स्थानों पर 6 और वन विज्ञान केंद्र खोलने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने बताया कि परिषद के द्वारा राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान योजना 2020-2030 तैयार की गयी है और नई परियोजनाओं के निर्माण इसी योजना के आधार पर की जा रही है। सभी पीसीसीएफ से चर्चा के आधार पर परिषद के विभिन्न संस्थानों के द्वारा प्रमुख नदियों यथा महानदी, कावेरी, कृष्णा, गोदावरी इत्यादि के पुनर्जीवन की मसौदा योजना तैयार की गई है और इसे स्वीकृति के लिए भेजा जा चुका है। इसी क्रम मेँ डॉ ए.के. पांडेय, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, बिहार नेँ भी अपने विचार प्रकट किये।

मुख्य अतिथि डॉ. संदीप त्रिपाठी , भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख , ओडिशा ने अपने उद्घाटनीय संबोधन में विचार व्यक्त किये कि परिषद में होने वाले बुनियादी, समकालीन, सहयोगी एवं नेटवर्किंग योजनाओं के सम्मिलन से शोध में सहयोग को प्रेरित करने के लिए अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा , जिसमें परिषद के बाहर के संस्थानों के साथ विभिन्न विषयों पर अनुसन्धान के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को समेकित करने, अनुसन्धान में तालमेल और पूरकता लाने में मदद मिलेगी जिसके लिए राष्ट्रीय उपस्थिति दर्ज करने वाले संगठनों के साथ समझौता कर शोध परिणामों में सुधार लाने तथा हित धारकों एवं अन्य उपयोगकर्ताओं तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। उन्होने इस प्रकार के क्षेत्रिय सम्मेलन के आयोजन तथा प्रमुख रूप से वन उत्पादकता संस्थान द्वारा विभिन्न विभागोँ एवँ कार्य समूहोँ के अधिकारियोँ, वैज्ञानिकोँ एवँ विशेषज्ञोँ को एकत्रित किये जाने की भूरी – भूरी प्रशंसा की।

प्रथम तकनीकी सत्र: राज्य के वन विभागों की वानिकी अनुसंधान की स्थिति, समस्याएं और मुद्दे

कार्यक्रम के प्रथम तकनीकी सत्र मे डॉ. संदीप त्रिपाठी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की और मुख्य रूप से वन प्रोटोकॉल गाँवों में ग्रामीण आबादी की आजीविका के लिए हित धारकों के लिए अनुसंधान को एकीकृत करने के लिए चुनौतियों का सामना करने का आह्वान किया. डॉ. योगेश्वर मिश्र, समूह समन्वयक (अनुसंधान), वन उत्पादकता संस्थान, रांची, ने संस्थान द्वारा किए जा रहे अनुसंधान एवं विस्तार सम्बंधी गतिविधियों का विस्तार से परिचय दिया। उन्होंने संस्थान में उपलब्ध सेवाओं और संरचना के बारे में जानकारी दी। उन्होंने संस्थान द्वारा वर्तमान और आगामी अनुसंधान गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। डॉ. प्रवीण एच. चव्हाण , समूह समन्वयक (अनुसंधान), वन जैव विविधता संस्थान हैदराबाद ने जैव विविधता मूल्यांकन, कीटोँ के जैविक नियंत्रण, विभिन्न कृषि वानिकी मॉडल और तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश में संस्थान के कार्य योजना की तैयारी के लिए वन संसाधनों के मूल्यांकन और अनुसंधान गतिविधियों पर एक अवलोकन दिया। इसके पश्चात झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार और तेलंगाना के वन विभागों द्वारा अनुसंधान आवश्यकताओं पर प्रस्तुति / चर्चा की गयी।

इस सत्र मे डॉ. (श्रीमती) एस. दुबे, भा.व.से., सहायक प्रधान मुख्य वन संरक्षक (आर. तथा एम.), पश्चिम बंगाल ने राज्य में बीज स्टेंड, एस पी ए, सी पी टी, मृदा परीक्षण कार्यक्रम, दुर्लभ, लुप्तप्राय और औषधीय पौधों के संरक्षण सहित वानिकी अनुसंधान का अवलोकन प्रस्तुत किया। वह *Pterocarpus marsupium, Terminalia arjuna, Terminalia tomentosa, D. sissoo*, ट्री इंप्रूवमेंट स्टडीज पर अन्य संगठन के साथ सहयोग की बात कही, श्री सत्यजीत सिंह, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक, झारखंड, डॉ अक्षय कुमार पट्टनायक, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान), भुवनेश्वर ने विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों पर विभाग द्वारा की गई गतिविधियों उद्यान , हाई-टेक नर्सरी, बीज बाग, जैव विविधता अध्ययन, NTFP बागान और फाइकस प्रजातियों का संरक्षण विषय को प्रस्तुत किया। उन्होने परिणामों के प्रकाशन एवं विश्लेषण करने के लिए, विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए मिट्टी नमूना विश्लेषण और मानव संसाधन विकास पर सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. वेंकटेश्वरुलू, तेलंगाना राज्य MPB, हैदराबाद, श्री. संजय कुमार सिन्हा, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक (कार्य योजना) और निदेशक, हरियाली मिशन, बिहार, श्रीमती प्रियंका वर्गीज, भा.व.से., वन संरक्षक (अनुसंधान और विकास), हैदराबाद, तेलंगाना ने वन विभाग द्वारा ग्राम पंचायत को शामिल कर किए गए हरित आंदोलन को प्रस्तुत किया है। उन्होंने राज्य मे चल रहे एवेन्यू प्लांटेशन, ट्रायल प्लॉट्स, क्लोनल सीड ऑर्चर्ड आदि के बारे मे विस्तार से बताया। श्री. कवलजीत सिंह, वन संरक्षक, बिहार ने वानिकी अनुसंधान दृष्टिकोण पर कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया की अन्य हितधारकों के सहयोग से अनुसंधान का विश्लेषण किया जाना चाहिए। अनुसंधान में सुधार के लिए जीआईएस और रिमोट सेंसिंग जैसी नई तकनीक को शामिल करना आज की जरूरत है। श्री एस नायक, एसएफडी, ओडिशा ने विशेष रूप से कछुओं के संरक्षण पर वन्य जीवन के संरक्षण कार्यक्रमों के साथ खनन और रेत टिब्बा परिदृश्य में विभाग द्वारा किए गए विभिन्न जैव विविधता अध्ययनों के बारे में बताया। श्री लोकेश जसवाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (सीए.एम.पीए.), तेलंगाना ने औषधीय पौधों के वृक्ष सुधार, नर्सरी तकनीक, जैव विविधता संरक्षण और मूल्य संवर्धन के क्षेत्रों में अनुसंधान की आवश्यकता के बारे में चर्चा की।
सत्र के अंत मेँ डॉ . त्रिपाठी ने *मिलिया डूबिया*, बांस और सी .पी.टी. चयन पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा किए गए शोध अध्ययनों की सराहना की। उन्होंने पोपलर और *मिलिया डूबिया* की बिक्री के लिए औद्योगिक संपर्क शुरू करने पर जोर दिया।

द्वितीय तकनीकी सत्र: क्षेत्रीय महत्व की केंद्रित थीम आधारित प्रस्तुति

कार्यक्रम के द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. जोस टी. मैथ्यूज, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक , (आर.एम.डी.), पश्चिम बंगाल ने की। विषय वस्तु आधारित इस सत्र मे (1) कृषि वानिकी अनुसंधान / वैकल्पिक भूमि का उपयोग खेती विषय पर श्री आदित्य कुमार, वैज्ञानिक-डी, आईएफपी रांची ने पूर्वी क्षेत्र के लिए कृषि वानिकी मॉडल पर अपनी प्रस्तुति दी डॉ. एम . उस्मान , सी.आर.आई.डी.ए., हैदराबाद द्वारा अर्ध शुष्क क्षेत्र के लिए एग्रोफोरेस्ट्री मॉडल , (2) क्लोनल वानिकी और आनुवंशिक सुधार बिषय के अंतर्गत डॉ.एन शिवराजन, आईसीएआर-एनबीपीजीआर, हैदराबाद द्वारा वानिकी आनुवांशिक संसाधन और जैव विविधता संरक्षण एवं डॉ. एच. डी. कुलकर्णी द्वारा, क्लोनल रिसर्च पर व्यखान दिया गया. (3) गैर कास्ठ्य वन उपज विषय के अनतरगत डॉ. वेंकटेश्वरुलू, तेलंगाना राज्य MPB, हैदराबाद द्वारा औषधीय पादप अनुसंधान पर स्थिति और गुंजाइश एवं (4) डॉ. शरद तिवारी , वैज्ञानिक-एफ, आईएफपी रांची द्वारा 'पूर्वी भारत में आक्रामक (इंवेसिव) प्रजातियों का खतरा' विषय पर प्रस्तुति दी गयी ।

तृतीय तकनीकी सत्र: क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों विश्वविद्यालय और हितधारक के साथ सहभागिता और प्रस्तुति

कार्यक्रम के तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्रीमती. आर. शोभा, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, तेलंगाना ने की और सहयोगी अनुसंधान और अन्य अनुसंधान संगठनों के साथ भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद के मजबूत संबंध पर जोर दिया। उन्होंने तेलंगाना के दो बाघ अभयारण्यों से लैंटाना के उन्मूलन पर संक्षिप्त चर्चा की। सत्र की सह अध्यक्षता श्री. संजय कुमार सिन्हा, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक (कार्य योजना) और निदेशक, हरियाली मिशन, बिहार ने किया। उन्होंने इस वेबिनार के महत्व के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि स्थानीय वानिकी प्रजातियों मुख्यतः आंवला के नर्सरी तकनीकों पर अनुसंधान को प्रमुखता देने की बात कही। इस तकनीक सत्र में डॉ. कैलाश चंद्र, निदेशक, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, कोलकाता, ने संक्षेप में संस्थान में किए जा रहे अनुसंधान गतिविधियों का अवलोकन किया। उन्होंने संरक्षित क्षेत्रों में प्राणी विविधता अध्ययन, कृषि विज्ञान परिदृश्य, जैव विविधता पर जंगल की आग का प्रभाव , नदी की कायाकल्प के लिए विशेष मृदा रणनीति को अपनाने के लिए जंगल के प्रभाव और जीव संसाधनों पर भूमि पृथक्करण आकलन के बारे में चर्चा की तथा वन उत्पादकता संस्थान , रांची के साथ अनुसंधान सहयोगोँ के विभिन्न बिंदू भी प्रस्तुत किये । डॉ. के के शर्मा , निदेशक, आई आई एन आर जी, रांची ने सुझाव दिया कि विभिन्न क्षेत्रों में गम उत्पादक वृक्षों के सहयोगी प्रजातियों के रोपण के लिए गम उत्पादक पेड़ों के अंतर और अंतर-विशिष्ट विविधता का अध्ययन करने के लिए सहयोग किया जा सकता है। । उन्होंने ग्रामीण स्तर पर NTFPs के मूल्यवर्धन और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पेड़ों के परजीवियों के अध्ययन पर जोर दिया। डॉ. निरंजन कुमार , वैज्ञानिक, सीटीआर और टीआई ,, रांची ने उनके संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों के माध्यम से तसर रेशम उत्पादन पर चर्चा की और भारत में तसर रेशम कृमि वितरण परिकल्पना के बारे मे बताया। संस्थान प्रशिक्षण और कौशल विकास, ब्लॉक वृक्षारोपण और जैविक प्राकृतिक अनाज के क्षेत्र में सहयोग कर सकता है। उन्होंने स्थानीय लोगों को पारिस्थितिक संरक्षक के रूप में कार्य करने के लिए जैव विविधता के संरक्षण के लिए प्रमुखता दी । डॉ. डी.आई.जी. प्रभु, वैज्ञानिक - सी , सीटीआर और टीआई , रांची ने भू-स्थानिक (Geoinformatics) तकनीक के साथ उष्णकटिबंधीय तसर रेशम कृमि परस्थितियों और उनके निर्वाह स्थानों के अस्तित्व पर संक्षेप में चर्चा की। डॉ शशि भूषण चौधरी, हेड एनबीपीजीआर, रांची ने आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पौधों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए केंद्र की शोध गतिविधियों को प्रस्तुत किया है। वह उपयोगी फेनोटाइपिक या गुणात्मक लक्षणों के आधार पर अस्पष्टीकृत संसाधनों की खोज , उपलब्ध संसाधनों की मैपिंग और विविधता की स्केलिंग में सहयोग चाहते हैं। डॉ. बिनय कुमार सिंह , प्रधान वैज्ञानिक , भारतीय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (Indian Institute of Agriculture Biotechnology), रांची ने संस्थान के साथ वर्तमान सहयोग की चर्चा की, श्री सरोज महापात्रा, प्रदान, रायपुर, छत्तीसगढ़ ने भारत के 7 राज्यों में वन आधारित आजीविका और गैर सरकारी संगठन की गतिविधियों के बारे में चर्चा की। गैर-सिंचित और परती भूमि में मिट्टी और नमी की गतिविधियों के लिए एनजीओ के हस्तक्षेप की आवश्यकता और आजीविका उन्नयन के लिए मूल्य संवर्धन के साथ-साथ तसर और लाख की खेती को बढ़ावा देने पर बल दिया। संसाधनों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रोटोटाइप की आवश्यकता होती है। पिछड़े और अग्रगामी संबंध विकसित करने होंगे। ग्रामीण लोगों के लिए भोजन के स्रोत के रूप में वन संसाधनों की क्षमता पर प्रस्ताव बनाने और वन संसाधनों के स्थायी प्रबंधन के लिए सहयोग किया जा सकता है।

चतुर्थ सत्र: समापन सत्र

कार्यक्रम के चतुर्थ तथा अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री अरुण सिन्ह रावत , भा.व.से., महानिदेशक, भारतिय वानिकी अनुसंधान एवँ शिक्षा परिषद, देहरादून ने तथा उपअध्यक्षता श्री सुनील दत्त शर्मा, भा.व.से., उप-महानिदेशक (अनुसंधान), भारतिय वानिकी अनुसंधान एवँ शिक्षा परिषद , देहरादून ने की। उन्होने दिन भर की चर्चा के विभिन्न आयामोँ पर प्रकाश डाला तथा परिषद मेँ पहले से ही चल कार्योँ के परिपेक्ष मेँ प्रस्तावित अनुसंधान सहयोगोँ के उपर चर्चा करते हुए समापन की घोषणा की। समापन के पूर्व , पूर्ण दिवस के कार्यक्रमोँ की रूपरेखा, राज्योँ से अधिकारियोँ के प्रतिनिधित्व व चर्चा, विभिन्न अनुसंधान संस्थानोँ के प्रतिनिधियोँ की प्रतिभागिता को सुनिश्चित करते हुए, एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम को उपयोगी तथा सुचारू रूप से आयोजित करने हेतु वन उत्पादकता संस्थान , रांची तथा वन जैवविविधता संस्थान, हैदराबाद की प्रशंसा की।

अंत मेँ डॉ. योगेश्वर मिश्र ने कार्यक्रम के अंत मे सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

आभासीय माध्यम से आयोजित क्षेत्रीय अनुसंधान संगोष्ठी में संस्थान के सभी अधिकारी/ वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों की सहभागिता के कुछ चित्र

संबधित प्रकाशित समाचार पत्रों की कतरनें

वन उत्पादकता संस्थान में वेबिनार के माध्यम से पूर्वी भारत क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का उद्घाटन

क्षेत्रीय- राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान की आवश्यकताओं पर दिया गया बल

आजाद सिपाही संवाददाता

पिस्कानगड़ी । प्रखंड के लाल गुटवा स्थित वन उत्पादकता संस्थान में मंगलवार को वेबिनार के माध्यम से पूर्वी भारत के एक दिवसीय क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ नितिन कुलकर्णी, वन जैव विविधता संस्थान, हैदराबाद के निदेशक, डी जयप्रसाद ने सभी प्रतिभागियों का संयुक्त रूप से स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. संदीप त्रिपाठी ने वेबिनार के माध्यम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि परिषद में होने वाले बुनियादी, समकालीन, सहयोगी एवं नेटवर्किंग योजनाओं के सम्मिलन से शोध में सहयोग को प्रेरित करने के लिए अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

उन्होंने बताया ने केवल राज्य वन विभाग वल्कि विभिन्न वन आधारित उद्योग, किसानों, सहकारी समितियों, गैर सरकारी संगठन, वानिकी अनुसन्धान से सम्बंधित किसी भी सामान्य एवं विशिस्ट समस्या के निदान हेतु, हमारे किसी भी संस्थान से संपर्क कर सकते हैं। कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में ओडिशा के आईएफएस, पीसीसीफ, एचओएफएफ डॉ. संदीप त्रिपाठी, मुख्य समन्वयक भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् के अरुण सिंह रावत, एस.डी. शर्मा, आईएफएस, डीडीजी, अनुसंधान के आर. सोभा, आईएफएस, पी. के. वर्मा, ए.के. पांडे, डॉ. जोस टी. मैथ्यूज, एके प्रसाद, डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. प्रवीण एच. चव्हाण, डॉ. कैलाश चंद्र, एस. दुबे ने वर्तमान अनुसंधान कि आवश्यकताओं पर अपना व्यक्तव्य देते हुए मार्गदर्शन दिया।

मौके पर डॉ. एस.डी. शर्मा इस सम्मलेन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस कार्यशाला के अंतर्गत झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, आंध्रा प्रदेश तथा ओड़ीसा राज्यों के हितधारकों के साथ विचार विमर्श कर क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान की आवश्यकताओं की पहचान करने के लिए तथा उनकी प्राथमिकतायें निर्धारित करने की जरूरत पर बल दिया। संस्थान के जनसंपर्क अधिकारी शम्भूनाथ मिश्र सहित पूर्वी भारत के प्रमुख फॉरेस्ट और शिक्षाविदों में सत्यजीत सिंह, डॉ अक्षय कुमार पट्टनायक, डॉ वेंकटेश्वर, संजय कुमार सिन्हा, प्रियंका वर्गीज, डॉ. के के शर्मा, डॉ. निरंजन कुमार, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, टी.महतो, सरोज महापात्र, प्रदान के अलावा मुख्यतः कॉलेजों के प्रतिनिधि, विश्वविद्यालयों, केंद्रीय एवं राज्य वन मंत्रालय के सदस्यों, गैर सरकारी संगठन, औद्योगिक क्षेत्र के गणमान्य अतिथि ने सम्मलेन में भाग लिया। मौके पर डॉ. योगेश्वर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आजाद सिपाही 23/09/2020

वन उत्पादकता संस्थान में वेबिनार

देशप्राण संवाददाता

पिस्का नगड़ी, 22 सितंबर : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में वेबिनार के माध्यम से मंगलवार को पूर्वी भारत के एक दिवसीय क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए डॉ. नितिन कुलकर्णी (निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान, रांची) डी. जयप्रसाद (निदेशक, वन जैव विविधता संस्थान, हैदराबाद) ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. संदीप त्रिपाठी, (आईएफएस पीसीसीएफ एचओएफएफ ओडिशा) मुख्य समन्वयक अरुण सिंह रावत (भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्) एसडी शर्मा, (आईएफएस, डीडीजी, अनुसंधान), आर. सोभा, आईएफएस, पीके वर्मा, एके पांडे, डॉ. जोस टी. मैथ्यूज, एके प्रसाद, डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. प्रवीण एच. चव्हाण, डॉ. कैलाश चंद्र, एस. दुबे ने वर्तमान अनुसंधान कि आवश्यकताओं पर अपना व्यक्तव्य दिया।

वेबिनार में शामिल अधिकारीगण।

डॉ. एस. डी. शर्मा इस सम्मलेन के उदेश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस कार्यशाला के अंतर्गत झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश तथा ओड़िशा राज्यों के हितधारकों के साथ विचार-विमर्श कर क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान कि आवश्यकताओं कि पहचान करने के लिए तथा उनकी प्राथमिकताएं निर्धारित करने की जरूरत है। मुख्य अतिथि डॉ. संदीप त्रिपाठी ने अपने संबोधन में बताया कि परिषद् में होने वाले बुनियादी, समकालीन, सहयोगी एवं नेटवर्किंग योजनाओं के सम्मेलन से शोध में सहयोग को प्रेरित करने के लिए अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

उन्होंने बताया न केवल राज्य वन विभाग बल्कि विभिन्न वन आधारित उद्योग, किसानों, सहकारी समितियों, गैर सरकारी संगठन, वानिकी अनुसन्धान से संबंधित किसी भी सामान्य एवं विशिस्ट समस्या के निदान हेतु, हमारे किसी भी संस्थान से संपर्क कर सकते हैं।

संस्थान के जनसंपर्क अधिकारी शम्भूनाथ मिश्र सहित पूर्वी भारत के प्रमुख फॉरेस्ट और शिक्षाविदों में सत्यजीत सिंह, डॉ. अक्षय कुमार पट्टनायक, डॉ वेंकटेश्वर, संजय कुमार सिन्हा, प्रियंका वर्गीज, डॉ. के के शर्मा, डॉ. निरंजन कुमार, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, टी.महतो, सरोज महापात्र, प्रदान के अलावा मुख्यतः कॉलेजों के प्रतिनिधि, विश्वविद्यालयों, केंद्रीय एवं राज्य वन मंत्रालय के सदस्यों, गैर सरकारी संगठन, औद्योगिक क्षेत्र के गणमान्य अतिथि ने सम्मलेन में भाग लिया। डॉ. योगेश्वर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

देशप्राण, दि. 23.09.2020

दैनिक भास्कर

रांची आसपास 23-09-2020

शोध के लिए नेटवर्किंग योजनाओं के साथ चलने की जरूरत : डॉ. संदीप

भास्कर न्यूज़ | पिस्का नगड़ी

बेविनार में शामिल विषय विशेषज्ञ।

वन उत्पादकता संस्थान रांची के द्वारा बेविनार के माध्यम से मंगलवार को पूर्वी भारत के एक दिवसीय क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का आयोजन किया गया। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने सभी का स्वागत किया।

इसमें मुख्य अतिथि डॉ. संदीप त्रिपाठी ने बताया कि परिषद मे होने वाले बुनियादी, समकालीन, सहयोगी एवं नेटवर्किंग योजनाओं के सम्मिलन से शोध में सहयोग को प्रेरित करने के लिए अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। उन्होंने बताया न केवल राज्य वन विभाग बल्कि विभिन्न वन आधारित उद्योग, किसानों, सहकारी समितियों, गैर सरकारी संगठन, वानिकी अनुसंधान से संबंधित किसी भी सामान्य एवं विशिष्ट समस्या के निदान हेतु किसी भी संस्थान से संपर्क कर सकते हैं। संस्थान के जनसंपर्क अधिकारी शम्भूनाथ मिश्र सहित पूर्वी भारत के प्रमुख फॉरेस्ट और शिक्षाविदों में सत्यजीत सिंह, डॉ अक्षय कुमार पट्टनायक, डॉ वेंकटेश्वर, संजय कुमार सिन्हा, प्रियंका वर्गीज, डॉ. के के शर्मा, डॉ. निरंजन कुमार, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, टी.महतो, सरोज महापात्र, प्रदान के अलावा मुख्यतः कॉलेजों के प्रतिनिधि, विश्वविद्यालयों, केंद्रीय एवं राज्य वन मंत्रालय के सदस्यों, गैर सरकारी संगठन, औद्योगिक क्षेत्र के गणमान्य अतिथि ने सम्मेलन में भाग लिया। डॉ योगेश्वर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दैनिक भास्कर 23/09.2020

वन आधारित कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दें : डॉ. त्रिपाठी

वन उत्पादकता संस्थान रांची में वेबिनार

संवाददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में वेबिनार के माध्यम से मंगलवार को पूर्वी भारत के एक दिवसीय क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए डॉ नितिन कुलकर्णी(निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान, रांची) डी जयप्रसाद (निदेशक, वन जैव विविधता संस्थान, हैदराबाद) ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि डॉ. संदीप त्रिपाठी, (आईएफएस पीसीसीएफ एचओएफएफ ओडिशा) मुख्य समन्वयक अरुण सिंह रावत(भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्) एस.डी. शर्मा,(आईएफएस, डीडीजी, अनुसंधान), आर. सोभा, आईएफएस, पी. के. वर्मा, ए.के. पांडे, डॉ. जोस टी. मैथ्यूज, ए के प्रसाद, डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. प्रवीण एच. चव्हाण, डॉ. कैलाश चंद्र, एस. दुबे ने वर्तमान अनुसंधान कि आवश्यकताओं पर अपना व्यक्तव्य दिया। डॉ. एस. डी. शर्मा इस सम्मलेन के उदेश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस कार्यशाला के अंतर्गत झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, आंध्रा प्रदेश तथा ओड़िसा राज्यों के हितधारकों के साथ विचार विमर्श कर क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर अनुसन्धान कि आवश्यकताओं कि पहचान करने के लिए तथा उनकी प्राथमिकतायें निर्धारित करने की जरूरत है। मुख्य अतिथि डॉ. संदीप त्रिपाठी ने अपने संबोधन में बताया कि परिषद मे होने वाले बुनियादी, समकालीन, सहयोगी एवं नेटवर्किंग योजनाओं के सम्मिलन से शोध में सहयोग को प्रेरित करने के लिए अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। उन्होंने बताया न केवल राज्य वन विभाग बल्कि विभिन्न वन आधारित उद्योग, किसानों, सहकारी समितियों, गैर सरकारी संगठन, वानिकी अनुसन्धान से सम्बंधित किसी भी सामान्य एवं विशिस्ट समस्या के निदान हेतु, हमारे किसी भी संस्थान से संपर्क कर सकते हैं। संस्थान के जनसंपर्क अधिकारी शम्भूनाथ मिश्र सहित पूर्वी भारत के प्रमुख फॉरिस्ट और शिक्षाविदों में सत्यजीत सिंह, डॉ अक्षय कुमार पट्टनायक, डॉ वेंकटेश्वर, संजय कुमार सिन्हा, प्रियंका वर्गीज, डॉ. के के शर्मा, डॉ. निरंजन कुमार, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, टी.महतो, सरोज महापात्र, प्रदान के अलावा मुख्यतः कॉलेजों के प्रतिनिधि, विश्वविद्यालयों, केंद्रीय एवं राज्य वन मंत्रालय के सदस्यों, गैर सरकारी संगठन, औद्योगिक क्षेत्र के गणमान्य अतिथि ने सम्मलेन में भाग लिया। डॉ. योगेश्वर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सन्मार्ग 23/09/2020

वन उत्पादकता संस्थान में अनुसंधान सम्मेलन

पिस्कानगड़ी. वन उत्पादकता संस्थान, रांची में वेबिनार के माध्यम से मंगलवार को पूर्वी भारत के एक दिवसीय क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ नितिन कुलकर्णी व हैदराबाद के डी जयप्रसाद ने संयुक्त रूप से किया. मुख्य अतिथि डॉ संदीप त्रिपाठी ने कहा कि बुनियादी, समकालीन, सहयोगी एवं नेटवर्किंग योजनाओं के सम्मिलन से शोध में सहयोग को प्रेरित करने के लिए अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा. मुख्य समन्वयक अरुण सिंह रावत, एसडी शर्मा, आर शोभा, पीकेवर्मा, एके पांडे, डॉ जोस टी मैथ्यूज, एके प्रसाद, डॉ योगेश्वर मिश्र, डॉ प्रवीण एच चव्हाण, डॉ कैलाश चंद्र, एस दुबे ने वर्तमान अनुसंधान की आवश्यकताओं पर जोर दिया. कहा कि न केवल राज्य वन विभाग बल्कि वन आधारित उद्योग, किसान, सहकारी समिति, गैर सरकारी संगठन वानिकी अनुसंधान से संबंधित किसी भी समस्या के निदान हेतु हमारे किसी भी संस्थान से संपर्क कर सकते हैं.

प्रभात खबर, दि. 23/09/2020